तुम कबूल मैं तरबियत पाई, खसलत तुमारी इनमें आई।
भी देखो तुम एह वचन, हजरत ईसे जो कहे रोसन।। ३ ।।

श्री श्यामा महारानी (देवचन्द्रजी) कह रही हैं, हे राजजी महाराज! आपने मेरी विनती स्वीकार कर ली, इसलिए मुझे खुशी हुई। आपके सारे गुण मेरे बेटे मेहराज ठाकुर में आ गए हैं (प्राणनाथजी में)। हे सुन्दरसाथजी! हजरत ईसा (श्यामा महारानी) श्री देवचन्द्रजी कहते हैं, इन पर विचार करो।

तेहेकीक मुझको है ए डर, खलक अपनी जो है हाजर।
पीछे मेरे मोहीम खैरात, जो वर पाए करे दीन की बात।। ४ ।।

श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) श्री राजजी से विनती करते हैं, मुझे इनसे डर लगता है कि मेरी जाहिरी औलाद जो बिहारीजी हैं, मेरे मरने के बाद दीन धर्म (निजानन्द सम्प्रदाय) का प्रचार-प्रसार नहीं कर सकेंगे।

पातसाही मेरी बीच उमत, कबूल करने को बजाए ल्यावत।
पीछे मेरे मौत के कहे हजरत, चाहिए खलीफा इस बखत।। ५ ।।

श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) श्री राजजी से कह रहे हैं, मुझे एक ऐसा खलीफा दो जो मरने के बाद दीन की बागडोर सम्भाल सके और मेरे मोमिनों के वास्ते जो आपने हुकम कर रखा है, उसे पूरा करे।

ना जननेवाली मेरी औरत, अठानवे बरसकी मजल है इत।
और बस बकस ना कर, नजीक तेरे तेहेकीक मुकरर।। ६ ।।

श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) श्री राजजी से कह रहे हैं कि उम्र ढलकर अट्ठानवे वर्ष की हो गई है और ऐसा खलीफा पैदा करने की ताकत अब मेरे में नहीं रह गई है। (यह अट्ठानवे वर्ष सम्वत् १६३८ से मन्दसौर में पूरे होते हैं) मुझे कुछ मत दो, केवल एक लड़का दो। यह अब तुम्हारे वश की बात है।

फरजंद मेरे ऐसा होए, साहेब दीन हुकम का सोए।
लेवे मीरास इमामत, लेवे मुझ से हकीकत।। ७ ।।

जिकरिया (श्री श्यामा महारानी देवचन्द्रजी) कह रहे हैं कि लड़का ऐसा देना जो दीन धर्म का काम करे और मेरे हुकम से चले और मेरे से आपकी न्यामत लेकर मेरे अधिकार भी ले ले।

एह मीरास कही मिलकत, इलम की लेवे हिकमत।। ८ ।।

बारह हजार मोमिन ही खुदाई मिल्कियत है और इनको ही दीन का वारिस कहा है। इन भूले मोमिनों को जागृत करने के लिए तारतम का ज्ञान मेरे से ले ले।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। ३८४ ।।

औलाद याकूब कह्या इस्हाक, इनों का कबीला है पाक।
पेहेले कही एही मजकूर, और बिध लिखी कर रोसन नूर।। १ ।।

कुरान के अन्दर इसहाक का लड़का याकूब कहा है। बातूनी में देवचन्द्रजी महाराज इसहाक हैं। मेहराज ठाकुर याकूब हैं। इनका कबीला बारह हजार मोमिन हैं जो पाक-साफ हैं। पहले प्रकरण में यह बात कही है। अब दूसरे तरीके से इसे जाहिर करती हूं।

Nijanand App

ए जो मिलाइयां हैं जंजीर, सो जुदे कर देऊं खीर और नीर।
एही अगली फेर और बिध लिखी, सोई समझी चाहिए दिल में रखी।। २ ।।

कुरान की जंजीरें मिलाकर माया और ब्रह्म, झूठ और सत्य को अलग-अलग करके बताती हूं। यह हकीकत पहले भी लिखी है। अब दूसरे तरीके से बताती हूं। इसे भी दिल में रखना।

भेद न पाइए बिना तफसीर, ए दई सिच्छा महंमद फकीर।
खासा मुरीद ए जब भया, बेटा नजरी एहिया को कह्या।। ३ ।।

इमाम मेंहेंदी श्री प्राणनाथजी ने कहा है कि कुरान के रहस्य तफसीरे हुसैनी के बिना समझ में आते नहीं हैं। इसहाक पैगम्बर का जब एहिया चेला बना तो उसे ही इसहाक का नजरी बेटा कहा है।

ईसा को कर गाया खसम, कलाम अल्ला ताए कही हुरम।
कुरान किताबें जिकर किया, नाम लिख्या ताको जिकरिया।। ४ ।।

एहिया ने रूह अल्लाह को खुदा के समान मान लिया, जबकि कुरान में उनको खुदा की अंगना श्री श्यामाजी कहा है। कुरान में लिखा है कि जिकरिया पैगम्बर ने बेटे के वास्ते बार-बार प्रार्थना की। इस वास्ते उसका नाम जिकरिया हुआ।

जो बेटा नसली ईसे का था, सो कलाम अल्ला कहे जुदा रह्या।
इन बिध केती कहूं जंजीर, कुरान कई भांतों तफसीर।। ५ ।।

ईसा रूह अल्लाह श्री श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी के नसली बेटा बिहारीजी हैं और नजरी बेटा श्री मेहराज ठाकुर हैं। नसली बेटा बिहारीजी दीन-धर्म से अलग रहा। इस तरह से कुरान में कई तरह से बयान लिखा है।

हादिएं इनको ऐसा किया, फरजंद मेरे मुद्दा लिया।
हे परवरदिगार मेरे, कबूल हुआ रजामंदी तेरे।। ६ ।।

जिकरिया खुदा से कह रहे हैं, आपने मेरी दुआ मंजूर की और मेरे जैसे मेरे बेटे एहिया ने धर्म का काम अपने सिर ले लिया, इसलिए कहते हैं कि आपने मेरी अर्ज स्वीकार की, इसलिए मैं आपका ऐहसान-मंद हूं।

अव्वल कौल इनके बेसक, जिनमें राजी होवे हक।
पीछे इसके सिजदे सिर, द्वा करे जारी कर कर।। ७ ।।

जिकरिया कहते हैं कि आपने जो मुझे बेटा दिया है, उसकी वाणी सत्य है। यह ऐसे हैं जिससे आप भी खुश हो जाएंगे। यह मेरा बेटा मेरे मरने के बाद आपके चरणों में ही सिजदा बजाए, ऐसी प्रार्थना रो-रोकर कर रहे हैं।

करम खुदाए का साहेब सिजदे, पोहोंच्या कौल मोंह वायदे।
इन समें सब कबूल करे, एह द्वा दिल सारी धरे।। ८ ।।

जब जबराईल फरिश्ते ने आकर जिकरिया से कहा कि खुदा ने तुम्हारी विनती पर कृपा की है और तुम्हारी मांग के अनुसार ही खुदा ने बेटा देना मंजूर कर लिया है। खुदा तुम्हारी सब विनती को स्वीकार कर गुणवान बेटा देंगे।

Nijanand App

खुसखबरी तोहे जिकरिया, देता हों मैं यों कर कह्या।
ए बेटा तुझे बकसिया, कह्या नाम उसका एहिया।। ९ ।।

फरिश्ते ने जिकरिया से कहा कि तुझे मैं यह खुशखबरी दे रहा हूं। यह बेटा जो तुम्हें खुदा ने दिया है, एहिया होगा।

पैदा किया एहिया को देख, आगूं वह मैं नाम एक।
बीच ल्याए जादलमिसल, भांत बुजरकी नाम नकल।। १० ।।

खुदा ने कहा है कि इस एहिया बेटे को देखो जो तुम्हारे आगे है और वह मेरा ही स्वरूप है। मेरा नाम ही इसका नाम है। यह किस्सा जादल मिसल किताब में लिखा है कि एहिया पैगम्बर को खुदा के समान ही बताया। खुदा ने कहा कि मेरा नाम (प्राणनाथ) ही इसका नाम होगा। मेरी शक्ति और गुण इसके अन्दर होंगे।

आगूं इस के ऐसा नहीं नाम, ना माफक इस के कोई काम।
बोहोत हुए कह्या इन रसम, कोई हुआ न आदमी इन इस्म।। ११ ।।

इस एहिया पैगम्बर के समान पहले कोई पैगम्बर नहीं हुआ और न इसकी तरह किसी ने कोई काम किए जो यह करेगा। पैगम्बर तो बहुत हुए हैं, परन्तु इनके समान कोई भी ऐसा नहीं हुआ।

बल्कि एही है बुजरक, किया खुदाए पैगंमर हक।
ना कछू मेहेतारीने पाले, बापके ना हुए हवाले।। १२ ।।

सबसे बड़ी बात यह है कि इसको पैगम्बर खुदा ने बताया है। संसार में जैसे मां-बाप बच्चों को पालते हैं, वैसे नहीं पाले गए। यह मेहराज ठाकुर बचपन से ही अपने सतगुरु श्री देवचन्द्रजी के चरणों में आ गए।

इमाम सालवी से नकल आई, आगूं इस थें नकल फुरमाई।
पीछे उसके ऐसा चहावे, बुजरकी बीच जहूरके ल्यावे।। १३ ।।

इमाम सालवी ने अपनी किताब में कहा कि जिकरिया के पीछे ऐसे चाहने वाले बुजरक एहिया ही हुए जो सबको ज्ञान दे रहे हैं।

पीछे उसके एते नाम लेवे, खासोंमें खासगी देवे।
भांत भांत नाम जुदे बेसुमार, अपने नामें सब किए उस्तुवार।। १४ ।।

जिकरिया के बाद में एहिया पैगम्बर ब्रह्मसृष्टियों में सिरदार होकर ज्ञान समझाते हैं। खुदा ने इस एहिया पैगम्बर को अपने तरह-तरह के नाम–इमाम मेंहेंदी, श्री प्राणनाथजी, हकी स्वरूप, आदि देकर बड़ी मजबूती से दीन पर खड़ा किया।

आखिर अपने काम मजबूत, ए अरस परस नाम कह्या मेहेमूद।
आखिर बुजरकी महंमद पर आई, खासी उमत महंमदें सराही।। १५ ।।

यह अपने काम पर आगे चलकर बड़ी मजबूती से खड़े हुए। तब खुदा ने कहा कि मेरे और इनके बीच कोई फर्क नहीं है। इस तरह से पूरी बुजरकी आखिरी मुहम्मद श्री प्राणनाथजी महाराज पर आई और उन्होंने अपनी उम्मत की बड़ी सराहना की है।

Nijanand App

इस्म धरेका माएना एह, ऐसी सबी कोई और न देह।
ए तिसवास्ते ऐसा कह्या, गुनाह कस्त कोई जाहेर न भया।। १६ ।।

एहिया मेहराज ठाकुर को खुदा का नाम "प्राणनाथजी" मिला आज दिन तक इस संसार में किसी के तन को ऐसी शोभा (महिमा) नहीं मिली, इसलिए कहा है कि एहिया पैगम्बर से किसी तरह का गुनाह (कसूर) नहीं होगा।

हो साहेब मेरे जिकरिया यों केहेवे, मेरे फरजंद क्यों ऐसा होवे।
मेरी औरत है इन हाली, सो तो नहीं जनने वाली।। १७ ।।

अब फरिश्ता जाकर खुदा से कहता है कि जिकरिया पैगम्बर ने कहलवाया है कि ऐसा गुणवान पुत्र मुझे कैसे मिलेगा? मेरी औरत बहुत बूढ़ी हो गई है। वह बच्चा पैदा नहीं कर सकती।

अब मैं पोहोंच्या उमेद एती, बुजरकी पाइए इनसेती।
ना कछू एती थी खबर, ना देहेसत लई दिल धर।। १८ ।।

जिकरिया कहते हैं कि मैं इस उम्र में पहुंचा हूं, फिर भी लड़के की चाहना करता हूं क्योंकि इस लड़के से दीन इस्लाम को बुजरकी (बड़ाई) मिलेगी। ऐसा मुझे कुछ पता नहीं था। न किसी प्रकार की चिन्ता थी।

मोहे गरीबी और नातवान, ए बड़ाई आपसों हुई पेहेचान।
होए पेहेचान जो मेरी चाहे, बिलंद करने जो कुदरत उठाए।। १९ ।।

जिकरिया कहते हैं, हे मेरे खुदा! मैं तो गरीब और शक्तिहीन हूं। मुझे दीन-धर्म की साहेबी आपसे मिली है। दीन-धर्म की मेरी बादशाही का विस्तार करना चाहें तो तारतम ज्ञान की महिमा को सिर पर उठावें और जागनी का काम करें।

कहे फरिस्ते खुदा के हुकम, ए जिकरिया कह्या जो तुम।
ए बात योंही कर है, बुढ़ापा नातवानी कहे।। २० ।।

फरिश्ते ने खुदा के हुकम से कहा कि तुमने जो कहा है वह बात इसी तरह की है। बुढ़ापा कहा है, वह भी ठीक है। शक्तिहीन कहा, वह बात भी सही है।

ए तेरे खुदाएने कह्या, पैदा करने काम फरजंद का भया।
कह्या बीच इस सिनसे, आसान खुदा के दो सकसोंसे।। २१ ।।

फरिश्ता ने कहा, हे जिकरिया! खुदा ने कहा कि तेरे घर लड़का पैदा करने का हुकम दे दिया है। जिकरिया ने पूछा मुझे पुत्र कब मिलेगा? तो उत्तर मिला कि इसी साल मिलेगा। खुदा के लिए लड़का देने का काम बड़ा आसान है। वह बसरी और मलकी सूरतों को एक तन में इकट्ठा करके तीसरा हकी सूरत पैदा कर देंगे जिसके लिए सारे काम आसान होंगे।

तो सांचा एहिया पैदा किया, नाबूदसेंती बूदमें लिया।
बुजरकी सों खुदाएने कही, जिकरिया फरजंद पोहोंच्या सही।। २२ ।।

फरिश्ता कहता है कि खुदा ने तेरे चाहे अनुसार लड़का देना स्वीकार कर लिया है। जब मेहराज ठाकुर पैदा हुए, तो वह तन तो मिटने वाला था। अब जब श्री देवचन्द्रजी के चरणों में मेहराज ठाकुर आए तो देवचन्द्रजी ने श्री इन्द्रावतीजी की आत्मा परख कर तारतम देकर अखण्ड की पहचान कराई।

Nijanand App

निजानन्द सम्प्रदाय का विस्तार करने के वास्ते खुदा ने इसको बड़ी साहेबी दी है। तुम्हारे चाहने के अनुसार यही एहिया बेटा आया है।

खुसखबरीसों हुआ खुसाल, पेहेले न सुध थी वजूद इन हाल।
ए बात जाहेर न जानी कबे, दूजे फेरे पोहोंचे इन मरतबे।। २३ ।।

जिकरिया पैगम्बर को पहले इस बात की उम्मीद नहीं थी। जब उसे एहिया लड़का मिलने की खबर फरिश्ते ने दी, तो वह बहुत खुश हुए। इस बात को किसी ने कभी जाना नहीं था। यह जब दूसरे जामे (तन) श्री प्राणनाथजी के तन में आए तब इन रहस्यों का पता चला।

कहे जिकरिया साहेब मेरे, किन बिध वाका होसी तेरे।
मेरी निसानी की खबर जेह, मोहे नहीं परत मालूम एह।। २४ ।।

जिकरिया पैगम्बर कहता है, हे मेरे खुदा मैं तुम्हारा एहसान कैसे चुकाऊं? मेरी जो अपनी औलाद गादीपति बिहारीजी हैं, वह यह काम नहीं कर सकती।

कह्या खुदाएने निसानी तेरी, न सकेगा कहे हकीकत मेरी।
मरदों से बात न होवे इन, केहेनी तीन रात और चौथा दिन।। २५ ।।

खुदा ने कहा यह बात ठीक है कि तेरी औलाद गादीपति बिहारीजी मेरी हकीकत को जाहिर नहीं कर सकेगा। मोमिनों से बातें करने की ताकत इसमें नहीं है। यह तेरा लड़का बिहारीजी तीन रात और चौथा दिन की लीला बोल नहीं सकेगा, अर्थात् बृज, रास, जागनी और परमधाम की बात मोमिनों के साथ नहीं कर सकेगा।

ए बेटे नसली की जंजीर, ए पावें गिरो वचिखिन वीर।
लैलत कदर के तीन तकरार, दिन फजरका खबरदार।। २६ ।।

यह तेरे नसली बेटे गादीपति बिहारीजी की हकीकत है। यह ज्ञान की बातें मोमिनों के सिरदार श्री प्राणनाथजी महाराज ही कर सकेंगे। यह लैल तुल कदर के तीन भाग (बृज, रास, जागनी) की बात और फजर का ज्ञान मारफत सागर देकर सबको जगाकर अखण्ड मुक्ति प्रदान करेंगे।

ए क्या जाने फरजंद पैगंमरी, ए खिताब दिया एहिया नजरी।। २७ ।।

तेरा बेटा पैगम्बरी नहीं समझता, इसलिए तेरे नजरी पुत्र एहिया को धर्म का कार्य सौंपा है।

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ ४११ ॥

छिपके साहेब कीजे याद, खासलखास नजीकी स्वाद।
बड़ी द्वा माहें छिपके ल्याए, सब गिरोहसों करे छिपाए।। १ ।।

अपने धाम धनी को छिपकर ही रिझाना चाहिए और तभी अपने धनी के नजदीक जाने का स्वाद मिलता है। यह मोमिनों की बन्दगी (चितवन) है। श्री श्यामा महारानी श्री देवचन्द्रजी महाराज ने छिपकर बन्दगी की और किसी को जाहिर नहीं होने दिया।

बरस निन्यानवेलों सरम, न करी जाहेर होए के गरम।
बरस निन्यानवे कही हुरम, साथ ईसाके समझियो मरम।। २ ।।

निन्यानवे वर्ष (सम्वत् १७३७) रामनगर तक होते हैं। वहां तक श्यामा महारानी का दर्जा रहा, ऐसा समझना। आगे जब शेख खिदर के सामने खुद खुदाई का दावा लिया, तो हकी स्वरूप जाहिर हो गए।

Nijanand App